डा. राजीव कुमार,
इतिहास विभाग,
एच. डी. जैन कॉलेज, आरा

Topic - बिहार में अफ़ग़ानों का योगदान
Contribution of Afghans in Bihar.

प्रस्तावना :

---

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : बिहार में अफ़ग़ान शक्ति का उदय :

लोदी वंश (1451–1526) के समय से ही अफ़ग़ान सरदारों का प्रभाव बिहार में बढ़ने लगा था। 1526 में पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोदी की हार के बाद अनेक अफ़ग़ान सरदार बिहार और बंगाल क्षेत्र में संगठित हुए।
बिहार के सासाराम क्षेत्र से जुड़े फार्रुख़सियर खान के पुत्र फ़रीद खान, जो आगे चलकर शेर खान और बाद में शेर शाह सूरी के नाम से प्रसिद्ध हुए, ने बिहार को अपनी शक्ति का आधार बनाया।
1539 ई. में चौसा (बक्सर के निकट) के युद्ध में शेर शाह ने मुगल सम्राट हुमायूँ को पराजित किया और 1540 ई. में कन्नौज के युद्ध में उसे पूर्णतः परास्त कर उत्तर भारत में "सूरी साम्राज्य" की स्थापना की।
इस प्रकार बिहार अफ़ग़ान सत्ता का जन्मस्थान और राजनीतिक प्रयोगशाला बना।

2. प्रशासनिक योगदान :

(क) केन्द्रीय और प्रांतीय प्रशासन का संगठन :

शेर शाह ने प्रशासन को अत्यंत व्यवस्थित रूप दिया। राज्य को "सरकार", "परगना" और "ग्राम" इकाइयों में विभाजित किया गया।
सरकार – बड़े प्रशासनिक जिले
परगना – राजस्व इकाई
ग्राम – आधारभूत इकाई
प्रत्येक स्तर पर अधिकारियों की नियुक्ति की गई, जैसे—
शिकदार (सैन्य अधिकारी)
अमीन (भूमि मापन अधिकारी)
कानूनगो (राजस्व अभिलेख अधिकारी)
यह प्रणाली आगे चलकर मुगलों ने भी अपनाई और इसे अधिक विकसित किया।

(ख) भूमि राजस्व व्यवस्था :

अफ़ग़ानों का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान भूमि व्यवस्था में सुधार था।
भूमि की माप "जरीब" से कराई गई।
भूमि को उपज के आधार पर वर्गीकृत किया गया।
औसत उपज के आधार पर लगान निश्चित किया गया।
किसान और राज्य के बीच सीधा संबंध स्थापित किया गया।
यह व्यवस्था शोषण कम करने और राजस्व स्थिर करने की दिशा में एक बड़ा कदम था। बाद में अकबर के समय टोडरमल ने इसी पद्धति को विकसित कर "ज़ब्त प्रणाली" लागू की।

(ग) मुद्रा प्रणाली :

शेर शाह ने चाँदी का "रुपया" सिक्का प्रचलित किया।
इसका वजन लगभग 178 ग्रेन था।
यह मानकीकृत और शुद्ध था।

व्यापार में स्थिरता आई।
आज की भारतीय मुद्रा "रुपया" का ऐतिहासिक आधार इसी सिक्के में निहित है।

3. सड़क और संचार व्यवस्था :

अफ़ग़ानों का यह योगदान अत्यंत दूरगामी सिद्ध हुआ।
शेर शाह ने "सड़क-ए-आज़म" (Grand Trunk Road) का निर्माण कराया जो बंगाल से पंजाब तक फैली थी। बिहार इस मार्ग का केंद्रीय भाग था।
इस मार्ग पर—
प्रत्येक कोस पर मील के पत्थर
यात्रियों के लिए सराय
पेयजल हेतु कुएँ
छाया हेतु वृक्ष
स्थापित किए गए।
इससे बिहार व्यापारिक और सैन्य दृष्टि से सुदृढ़ हुआ।

4. आर्थिक योगदान :

(क) व्यापार का विकास
सड़क निर्माण और स्थिर मुद्रा के कारण व्यापार को प्रोत्साहन मिला। बिहार से—
अनाज
नमक
कपड़ा
अफीम
का व्यापार बढ़ा।
पटना और सासाराम प्रमुख व्यापारिक केंद्र बने।

(ख) कृषि सुधार
भूमि मापन और कर निर्धारण की वैज्ञानिक प्रणाली से कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई।
किसानों को निश्चित कर का ज्ञान होने से अनिश्चितता कम हुई।
राज्य की आय स्थिर हुई।

5. सैन्य सुधार :

शेर शाह ने सेना को अनुशासित और संगठित बनाया।
घोड़ों की दाग प्रणाली (branding system)
सैनिकों की सूची (रजिस्टर)
नकद वेतन प्रणाली
इन सुधारों ने बिहार को एक सुरक्षित सैन्य आधार बनाया।

6. न्याय और कानून व्यवस्था :

शेर शाह न्यायप्रिय शासक माना जाता है।
कठोर लेकिन निष्पक्ष दंड व्यवस्था
भ्रष्टाचार पर नियंत्रण
राजमार्गों की सुरक्षा
उसके शासन में यात्रियों को सुरक्षा का अनुभव होता था।

7. स्थापत्य कला में योगदान :

अफ़ग़ान स्थापत्य शैली का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण बिहार में ही मिलता है—
शेर शाह सूरी का मकबरा
सासाराम में स्थित यह मकबरा झील के मध्य बना है।
यह लाल पत्थर से निर्मित है।
इसकी शैली में इस्लामी एवं भारतीय तत्वों का समन्वय है।
इसके अतिरिक्त रोहतासगढ़ किला भी अफ़ग़ान स्थापत्य का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है।
रोहतासगढ़ किला
यह किला सामरिक दृष्टि से अत्यंत सुदृढ़ था।

8. धार्मिक एवं सामाजिक नीति :

अफ़ग़ानों ने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई।
हिंदू जमींदारों और स्थानीय प्रमुखों को प्रशासन में स्थान दिया गया।
सामाजिक समन्वय को बढ़ावा मिला।
यद्यपि वे कट्टर इस्लामी पृष्ठभूमि से आए थे, फिर भी व्यवहारिक राजनीति में उन्होंने व्यावहारिकता दिखाई।

9. सांस्कृतिक प्रभाव :

फारसी भाषा प्रशासनिक भाषा बनी।
सूफी परंपरा को संरक्षण मिला।
बिहार में इस्लामी स्थापत्य और सांस्कृतिक प्रभाव का प्रसार हुआ।

10. आलोचनात्मक मूल्यांकन :

अफ़ग़ानों का शासन अल्पकालिक (1540–1555) रहा, परंतु उसका प्रभाव दीर्घकालिक था।
सकारात्मक पक्ष
प्रशासनिक केंद्रीकरण
वैज्ञानिक भूमि व्यवस्था
सड़क और संचार क्रांति
मुद्रा स्थिरता
सैन्य संगठन
सीमाएँ
शासन की अल्प अवधि
उत्तराधिकार संकट (इस्लाम शाह के बाद अस्थिरता)
स्थायी राजनीतिक संरचना का अभाव
फिर भी इतिहासकारों का मत है कि यदि शेर शाह का शासन लंबा चलता, तो भारतीय प्रशासनिक ढाँचा और अधिक सुदृढ़ होता।

निष्कर्ष :

बिहार में अफ़ग़ानों का योगदान बहुआयामी और ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा।
शेर शाह सूरी ने बिहार को अपनी शक्ति का केंद्र बनाकर प्रशासनिक और आर्थिक सुधारों की ऐसी नींव रखी, जिसे बाद में मुगलों ने अपनाया और विकसित किया।
भूमि मापन प्रणाली, रुपया मुद्रा, ग्रैंड ट्रंक रोड, सुदृढ़ सैन्य संगठन और प्रभावी न्याय व्यवस्था—ये सभी योगदान बिहार को मध्यकालीन भारत के एक संगठित और समृद्ध प्रांत में परिवर्तित करने में सहायक सिद्ध हुए।
अतः कहा जा सकता है कि बिहार में अफ़ग़ानों का शासन भले ही अल्पकालिक था, परंतु उसका ऐतिहासिक प्रभाव गहरा और स्थायी था।